कहानीकार जहाँ काल्पनिक दृश्य का प्रस्तुतिकरण करता है सामाजिक रचनाकार सदैव यथार्थ का निर्माण करता है । ऐसी ही घटना कैसे कुछ नौजवानों के जीवन का मकसद बन जाती है यही इस कहानी का यथार्थ है । बात 1993 के अक्तूबर माह की है जब ग्रामीण विकास मण्डल की युवा टोली ने भिवानी के यूथ हास्टल में राष्ट्रीय सद्भावना शिविर का आयोजन किया । इसी दौरान महाराष्ट्र के लातूर और उष्मानाबाद जिलों में भूकम्प के रूप में आई प्राकृतिक आपदा ने देशवासियों को हिला कर रख दिया । इस पीड़ा से प्रभावित देश के 12 राज्यों से राष्ट्रीय शिविर में शामिल युवाओं को गहरा आघात लगा। तभी भूकम्प में मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए रखे मौन के बाद भूकम्प पीड़ितों की मदद करने का संकल्प लिया । संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से दस समूह बनाकर शिविरार्थी भिवानी के बाजार में दान जुटाने निकल पड़े । रात वापिस लौटकर कुल 6700 रूपये शिविर आयोजक के नाते दान राशि पीड़ितों तक पहुँचाने के लिए राजेन्द्र कुमार को सौंप दी । छः अक्तूबर को राष्ट्रीय शिविर आयोजक मण्डल के सामने यह दुविधा खड़ी हो गई कि इतनी बड़ी आपदा में शिविरार्थियों द्वारा जुटाई गई राशि भेजना औपचारिकता से अधिक कुछ नहीं है । गाँव लौटकर राजेन्द्र कुमार ने अपने युवा सार्थियों की बैठक बुलाई। बैठक में उपस्थित साथियों को प्राकृतिक आपदा की भयानक मार का हवाला देकर अधिक मात्रा में राहत सामग्री जुटाने के लिए तैयार किया ।

इस प्रकार दस अक्तूबर से राजेन्द्र कुमार, देशराम, रामअवतार और धर्मपाल ने गाँव–गाँव जाकर घूमकर 108 क्विंटल गेहूँ, 1500 साड़ी, 800 कम्बल, बर्तन और सत्तर हजार रूपये नकद जुटा लिये । चूँकि 1985 में मनाये गाँव निहालगढ़ की स्थापना के सात दिन के शताब्दी समारोह के बाद क्षेत्र के गाँवों में ग्रामीण विकास मण्डल के प्रति भरोसा कायम हो चुका था । इसके साथ ही गाँववासियों को यह आश्वासन दिया था कि आप द्वारा दी गई राहत सामग्री सीधे पीड़ितों तक पहुँचाई जायेगी । पीड़ितों तक त्वरित सामग्री पहुँचाना अब यक्ष प्रश्न था । हालाँकि आसपास के गाँवों के विश्वास का एक कारण यह था कि 1985 से 90 के बीच गाँव में पंचायत भवन और मन्दिर का निर्माण संस्था के युवाओं के श्रमदान से हुआ था जिसकी आसपास खूब चर्चा हुई ।

आखिरकार भाग दौड़ के पश्चात चरखी दादरी की ट्रक यूनियन ने केवल डीजल की कीमत लेकर एक ट्रक उपलब्ध करा दिया । दानकर्त्ताओं से किये वायदे और पीड़ितों

को सीधे राहत देने के संकल्प को लेकर राजेन्द्र कुमार, देशराम और रामसिंह 29 अक्तूबर को लातूर पहुँचे । पूर्व सूचना के मुताबिक नेहरू युवा केन्द्र लातूर के जिला युवा समन्वयक मोहन गोस्वामी युवा टीम लेकर स्वयंसेवक दल के साथ लातूर के खिल्लारी, लमजाना, गुबाल और गांजनखेड़ा पहुँचे । इन गाँवों में तीन दिन राहत शिविर आयोजित कर भूकम्प पीड़ितों को राहत सामग्री भेंट कर पीड़ितों को घाव पर मरहम लगाने और लोगों से किये वायदे को पूरा कर जो आत्मसन्तुष्टि का एहसास हुआ वो आज भी भूले नहीं । लेकिन कुदरत को शायद और परीक्षा लेनी थी । एक बार फिर 1999 में ग्रामीण विकास मण्डल ने सामाजिक प्रेरकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था । प्राकृति ने एक बार फिर चक्रवात के रूप में उड़ीसा में ताण्डव दिखाया और लोगों को गहरे घाव दिये । प्रशिक्षण में शामिल पचास सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने एक बार फिर संकल्प लिया और राहत कार्य में जुट गये । लेकिन इस बार राहत सामग्री जुटाने के लिए स्वयंसेवक दल को गाँव–गाँव नहीं जाना पड़ा, बल्कि क्षेत्र की सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं, युवा कल्ब और ग्राम पंचायतों ने राहत सामग्री एकत्रित कर पीड़ितों तक पहुँचाने का अनुरोध किया ।

उड़िसा चक्रवात के बाद सभी सहभागी संस्थाओं ने मिलकर प्राकृतिक आपदा राहत ग्रुप का गठन किया । इसके बाद देश में आई हर प्राकृतिक आपदा 2001 का गुजरात भूकम्प, 2004 की सुनामी, 2005 का जन्मू–कश्मीर भूकम्प, 2008 के बिहार बाढ़, 2013 के उत्तराखण्ड बाढ़ और 2018 के केरल बाढ़ पीड़ितों के लिए इस ग्रुप ने मौके पर जाकर राहत शिविर आयोजित कर न केवल मानव धर्म निभाया अपितु भारत एक होने का एहसास भी कराया, तभी तो सूनामी पीड़ितों के लिए आयोजित राहत शिविरों के दौरान नागाई के चमिनामेडू गॉव के तमिल भाई की टिप्पणी 'मुझे नहीं मालूम हरियाणा कहाँ है लेकिन तीन हजार किलोमीटर से हमारे दुख में हाथ बटाना हमें एक होने का सबक सिखाता है' यह तमिल का हिन्दी अनुवाद है ।

लेकिन इस कहानी में एक कड़ी और जुड़ रही है । इसका अहसास 1996 की 5 अप्रैल को बिल्कुल नहीं था, जब चरखी दादरी के साँवडिया हस्पताल में संस्था ने स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया । शिविर में जाँच कराके लौट रहे बुजुर्ग ने जब कहा कि भिवानी के जालान नेत्र हस्पताल का मुझे मालूम होता तो यहा क्यों आता ? डॉक्टरों ने बुजुर्ग को भिवानी जाकर सफेद मातियाँ के आप्रेशन की सलाह दी थी । शिविर समाप्ति

पर राजेन्द्र कुमार ने साथी युवाओं से बुर्जुग की टिप्पणी की चर्चा की । शिविर आयोजक टीम ने भविष्य में जाँच शिविर की बजाये चिकित्सा शिविर करने का निर्णय लिया । तदानुसार 8 अप्रैल को प्रथम निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया । इसके बाद भिवानी जिले के बड़े गॉवों में निरन्तर शिविरों का सिलसिला शुरू हुआ ।

जनवरी, 2006 से चरखी दादरी में हर महीने के तीसरे रविवार, जनवरी, 2009 से महेन्द्रगढ़ और सितम्बर 2009 से शुरू हुए रेवाड़ी जिले के कोसली कस्बे में नियमित मासिक निःशुल्क नेत्र शिविरों से यह स्वतः स्फूर्त आमजन की भागेदारी से मोतियाबिंद मुक्ति अभियान बन गया । यह सरकारी संस्थान और जन सहयोग का उदाहरण तब बना जब जालान राजकीय नेत्र हस्पताल ने नेत्र चिकित्सों ने अवकाश के दिनों में नियमित भाग लेकर अभियान को सफलता प्रदान की । महीने के प्रथम रविवार को महेन्द्रगढ़ में जनवरी 2009 से नियमित शिविर स्वैच्छाचारिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बन गया । जब चालीस स्वंय सेवक मासिक समय और निश्चित अंशदान भी देने लगे । आज महेन्द्रगढ़ के शिविर क्षेत्र के लोगों द्वारा जन्मदिन, शादी, पुण्यतिथि के अवसर पर प्रोयोजित किये जा रहे हैं । परिणामस्वरूप यथा दिनांक 564 नेत्र शिविरों में एक लाख से अधिक बर्जुगों की जाँच कर 19800 रोगियों के निःशुल्क सफेदमोतिया के आप्रेशन करवाये जा चुके हैं । हरियाणा के साधन सम्पन्न एकल परिवारों में बुर्जुगों की उपेक्षा के चलते यह एक पुण्य यज्ञ बन चुका है ।